

पद १

(रागः पिलु - तालः धुमाळी)

किति दैव सुकृत हैं फळलें। अजि म्यां परमामृत प्यालें॥ध्रु.॥
बसवुनी सन्मुख अवलोकुनियां। मानाभिमाना सोडविलें॥१॥
ज्ञानरूप मार्तांडप्रभूसी। सार्व काल मज जोडविलें॥२॥